International Journal of Enhanced Research in Educational Development,
IJERED, ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 1, Jan.-Feb, 2025

बीएड प्रशिक्षण संस्थान के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर माता-पिता की भागीदारी एवं शिक्षकों के द्वारा बाल विकास में व्यावहारिक प्रशिक्षण का अध्ययन

प्रेरणा गर्ग[1], प्रो. (डा.) हरीश कंसल[2]

[1]शोधार्थी निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर
[2]आचार्य निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर

सार

मनोविज्ञान की अवधारणा बहुत पुरानी है, उतनी ही पुरानी जितना मनुष्य। यह स्वास्थ्य की एक अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमताओं से अवगत होता है, जीवन में सामान्य समस्याओं और तनाव का सामना कर सकता है, प्रभावी ढंग से काम कर सकता है और रामाज में योगदान दे सकता है या इरागें एक व्यक्ति का स्वयं और दूसरों के प्रति दृ ष्टिकोण शामिल है। मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा करने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं और व्यक्ति भविष्य में जीवन और काम की मांगों का सामना करने में असमर्थ हो सकता है। विशेष रूप से मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं वाले छात्र खुद को सामाजिक रूप से अलग-थलग करके चिंता और भावनात्मक समस्याएं विकसित कर सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य सामाजिक शिक्षण कौशल को सक्षम बनाता है जो रिश्तों और कौशल में सुधार करता है, जिसके परिणामस्वरूप आत्मविश्वास और शैक्षणिक सफलता मिलती है। मानसिक रूप से बीमार लोग रिश्तों को अच्छे से काम करने में मदद करें।

मुख्य शब्द बीएड, प्रशिक्षण संस्थान, मानसिक स्वास्थ्य, बाल विकास, व्यावहारिक, प्रशिक्षण

परिचय

मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा

मानसिक स्वास्थ्य मुख्य कारक है जो किसी व्यक्ति की विचार की गुणवत्ता और संतुलित व्यक्तित्व को निर्धारित करता है, यह व्यक्ति के स्वयं, दूसरों और पर्यावरण के प्रत्ति अनुकूलन पर निर्भर करता है। किसी व्यक्ति के लिए स्वयं को समझने, पूर्ण जीवन जीने और लोगों को कुछ उपयोगी देने में सक्षम होने के लिए इस स्वस्थ दृष्टिकोण को प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण है। परिवर्तन का अर्थ है बदलाव। इस व्यवहार को पूरी तरह से साकार करने के लिए परिवर्तन होना चाहिए और इसमें सुधार होना चाहिए। यदि व्यक्ति परिवर्तित पर्यावरण में जीवित नहीं रह सकता है, तो यह कई समस्याओं का कारण बन सकता है। ये समस्याएं इंसान के दिमाग पर असर डाल सकती हैं।

मनोविज्ञान की अवधारणा बहुत पुरानी है, उतनी ही पुरानी जितना मनुष्य। यह स्वास्थ्य की एक अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमताओं से अवगत होता है, जीवन में सामान्य समस्याओं और तनाव

का सामना कर सकता है, प्रभावी ढंग से काम कर सकता है और समाज में योगदान दे सकता है या इसमें एक व्यक्ति का स्वयं और दूसरों के प्रति दृ ष्टिकोण शामिल है।

मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा करने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं और व्यक्ति भविष्य में जीवन और काम की मांगों का सामना करने में असमर्थ हो सकता है। विशेष रूप से मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं वाले छात्र खुद को सामाजिक रूप से अलग-थलग करके चिंता और भावनात्मक समस्याएं विकसित कर सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य सामाजिक शिक्षण कौशल को सक्षम बनाता है जो रिश्तों और कौशल में सुधार करता है, जिसके परिणामस्वरूप आत्मविश्वास और शैक्षणिक सफलता मिलती है। गानसिक रूप से बीमार लोग रिश्तों को अच्छे से काम करने में मदद करें। मानसिक बीमारी परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ संचार को प्रभावित कर सकती है। इससे रिश्ते बनाना और वादे और जिम्मेदारियां निभाना भी मुश्किल हो जाता है।

सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य से जीवन में सफलता

स्कूल और जीवन में बच्चों की सफलता सीधे उनके गानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी होती है। कुछ शोध निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि जिन बच्चों को मानसिक स्वास्थ्य सहायता मिलती है वे शिक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हैं, लचीले होते हैं और बदलाव के प्रति अनुकूल होते हैं। समग्र मानसिक स्वास्थ्य सीखने को निर्धारित करता है। मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करके गतिविधियों और व्यवहार में समस्या का समाधान किया जा सकता है।

मानसिक बीमारियों से जुड़े कारण

लगभग पाँचवें बच्चे और किशोर तनाव, चिंता, बदमाशी, सीखने की अक्षमता, और/या शराब और मादक द्रव्यों के सेवन जैसी गानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं का अनुभव करते हैं। मानसिक बीमारियों से जुड़े प्रचलित कलंक के कारण बड़ी संख्या में छात्रों को आवश्यक ध्यान और देखभाल नहीं मिल पाती है। इसलिए, स्कूली छात्रों के सामने आने वाली मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान के लिए व्यापक जागरूकता होना महत्वपूर्ण है।

शिक्षकों के द्वारा बाल विकास में व्यावहारिक प्रशिक्षण

स्कूल परामर्शदाताओं को बच्चों और किशोरों के सामने आने वाली व्यवहारिक और भावनात्मक चुनौतियों से निपटने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। वे छात्रों के संघर्षों को समझाने के लिए तैयार हैं। शिक्षकों को बाल विकास में व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्राप्त होता है। जो छात्र हमारे देश के भावी नागरिक हैं, वे राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण और प्रमुख भूमिका निभाते हैं। केवल अच्छे अंक प्राप्त करना और अच्छा प्रदर्शन करना तथा अच्छे शैक्षणिक अंक प्राप्त करना ही राष्ट्र के सच्चे प्रतिनिधियों की महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाएगा, जब तक कि बच्चा अपने कर्तव्यों को पूरी लगन और निष्ठा से पूरा न करे। इसलिए छात्रों के सर्वांगीण विकास पर अधिक जोर दिया जाना

चाहिए। यह तभी संभव है जब बच्चे की मानसिक स्थिति राष्ट्र के प्रतिनिधियों की जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से संभालने के लिए अच्छी हो, जो बदले में तब संभव है जब बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य को संरक्षित करना राभी यानी माता-पिता, शिक्षकों और समाज द्वारा वांछित हो।

मानसिक स्वास्थ्य किसी व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व और दूसरों के साथ उसके स्थिर व्यवहार का एक महत्वपूर्ण संकेतक है, जो उसके स्वयं के अनुसार, दूसरों की अपेक्षाओं के अनुसार और अपने वातावरण के अनुसार समायोजन की सीमा के आधार पर होता है जहां उरो आसानी से अनुकूलन करना होता है। संतुलित व्यक्तित्व की ऐसी स्थिति प्राप्त करना किसी व्यक्ति के लिए स्वयं को जानने, अपना जीवन पूर्णता से जीने और बदले में समाज, समुदाय और राष्ट्र को कुछ उपयोगी और उत्पादक देने के लिए

अत्यंत आवश्यक है। मनुष्य परिवर्तनों से बंधा हुआ है, वह लगातार विकास की प्रक्रिया में है। इससे अंततः वह बदलाव आएगा जो राष्ट्रीय विकास के लिए वांछनीय है। एक छोटे बच्चे के लिए ऐसे बदलावों को अनुकूलित करना जो उसके लिए नए हैं, इतना आसान नहीं है जब तक कि उसके आस-पास के लोग उसके प्रति सहायक और सहयोगी न हों। यदि बच्चे को इन परिवर्तनों के साथ तालमेल बिठाने में कठिनाई होती है तो विभिन्न समस्याएं और जटिलताएँ उत्पन्न होती हैं। ये समस्याएँ और जटिलताएँ वास्तव में एक बच्चे की मानसिक संरचना को आकार देती हैं।

शैनन एम. सुल्डो (2014) यह पांडुलिपि छात्रों के शैक्षणिक और सामाजिक भावनात्मक परिणामों के बीच परस्पर क्रिया से संबंधित स्कूल मानसिक स्वास्थ्य (एसएमएच) अनुसंधान के क्षेत्रों का सारांश प्रस्तुत करती है। व्यक्तिगत छात्रों और स्कूलों के स्तर पर शैक्षणिक सफलता की बहुआयामी अवधारणा को आगे बढ़ाने के बाद, हम अवलोकन और हस्तक्षेप अध्ययनों का सारांश देते हैं जो छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को उनकी शैक्षणिक उपलब्धि से जोडते हैं, द्विदिश संबंध की स्वीकृति के साथ। फिर, एसएमएच अनुसंधान की वर्तमान और भविष्य की दिशाओं पर चर्चा की जाती है, जिसमें (ए) स्कूलों की उपलब्धि पर एसएमएच स्वास्थ्य पहल और सेवाओं का प्रभाव, (बी) छात्रों के ऐतिहासिक रूप से उपेक्षित उपसमूहों के मानसिक स्वास्थ्य को संबोधित करने की आवश्यकता, और (सी) शामिल हैं। उन्नत परिणामों का समर्थन करने के लिए अंतःविषय सहयोग आवश्यक है। इन साहित्य एकीकरणों के निष्कर्षों के आधार पर, हम अनुसंधान और अभ्यास के लिए सिफारिशों और निहितार्थों के साथ निष्कर्ष निकालते हैं।

सिल्विया सेलिनास-फाल्क्वेज (2022) शिक्षण सबसे तनावपूर्ण कार्य संदभों में से एक है, जो पेशेवरों को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य कोविड 19 महामारी के समय में शिक्षकों के दृष्टिकोण से एनपीबी की बुनियादी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं, लचीलापन, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समावेशन की निराशा के प्रभाव का विश्लेषण करना है। एक शोध पद्धति के रूप में साइकोलॉजिकल नीड थ्वार्टिंग स्केल

पीएनटीएस प्रश्नावली, रेजिलिएंस स्केल (आरएस-14), ट्रेट मेटा मूड स्केल 24 (टीएमएमएस-24), का उपयोग करके चिकित्सीय शिक्षाशास्त्र और विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं के 542 शिक्षकों के साथ अध्ययन किया गया है। मारलाच बर्नआउट इन्वेंटरी, और समावेशन के लिए सूचकांक। परिणामों से पता चला कि एक ओर, आपस में हताशा के कारकों और बर्नआउट के बीच सकारात्मक सहसंबंध है और दूसरी ओर, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, लचीलापन और समावेशन सूचकांक के बीच सकारात्मक सहसंबंध है। निष्कर्षतः, शिक्षकों का लचीलापन भावनात्मक थकावट और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की हताशा की स्थिति में एसईएन वाले छात्रों को शामिल करने में एक सुरक्षात्मक भूमिका निभाता है।

फिफी बोगन (2015) स्क्रीनिंग उपकरणों का उपयोग अक्सर बच्चों और किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का पता लगाने के लिए किया जाता है। ताकत और कठिनाइयाँ प्रश्नावली (एसडीक्यू) बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य की जांच के लिए एक उपकरण है। एसडीक्यू का उपयोग विभिन्न मुखबिरों, यानी माता पिता, शिक्षकों और 11-16 वर्ष के बच्चों द्वारा स्वयं-रिपोर्टिंग के लिए मूल्यांकन के लिए किया जा सकता है। उद्देश्यरू इसका उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में माता-पिता और शिक्षक एसडीक्यू मूल्यांकन की सटीकता और वैधता की तुलना करना था, और यह विश्लेषण करना था कि क्या मूल्यांकन बच्चे के लिंग और सामाजिक जनसांख्यिकीय कारकों से प्रभावित थे। तरीकेरू कुल 512 प्राथमिक विद्यालय के छात्रों को एक क्रॉस-अनुभागीय अध्ययन में शामिल किया गया था। खोजपूर्ण कारक विश्लेषण, संवेदनशीलता/विशिष्टता विश्लेषण, क्रोनबैक के अल्फाज और लॉजिस्टिक रिग्रेशन लागू किए गए। परिणागरु माता-पिता ने 10.9: और शिक्षकों ने 8.8: बच्चों को उच्च जोखिम वाले व्यक्तियों के रूप में दर्जा दिया, लेकिन ओवरलैप कम (32.1:) था। माता-पिता और शिक्षकों के लिए

क्रोनबैंक के अल्फाज क्रमशः 0.73 और 0.71 थे। हालाँकि, कारक विश्लेषण से पता चला कि पाँच कारक समाधान की पुष्टि केवल शिक्षक रेटिंग के लिए की जा सकती है। इसके अलावा, शिक्षकों के रूप में समान बच्चों की रेटिंग करते समय केवल माता–पिता की रेटिंग मातृ शैक्षिक स्तर और जन्म के मूल देश से प्रभावित होती थी। निष्कर्षरू निर्माण वैधता की पुष्टि केवल शिक्षक मूल्यांकन के लिए की गई थी। हालाँकि, माता–पिता का आकलन बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य के एक आयाम को पकड़ सकता है जो सामाजिक–आर्थिक कारकों के प्रति संवेदनशील प्रतीत होता है, जो समानता के मुद्दों को संबोधित करते समय और माता–पिता और स्कूल के बीच बातचीत के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. शिक्षकों के द्वारा बाल विकास में व्यावहारिक प्रशिक्षण का अध्ययन
2. मानसिक बीमारियों से जुड़े कारण का अध्ययन

अनुसंधान पद्धति

अनुसंधान डिज़ाइन अपने प्रोजेक्ट के घटकों और डिज़ाइन के कुछ घटकों के विकास के बारे में शिक्षक की पसंद है। यह शोधकर्ता को एक तस्वीर प्रदान करता है कि हाथ में लिया गया कार्य क्या और कैसे करना है। समय–समय पर यह निर्धारित किया गया है कि एक उपयुक्त शोध डिजाइन अप्रासंगिक डेटा के संग्रह से बचाव करता है। शोध परिकल्पनाएँ किसी शोध कार्य को डिजाइन करने का आधार भी प्रदान करती हैं। एक शोध डिजाइन अच्छा है या नहीं, इसका मूल्यांकन स्टैंडआउट्स द्वारा किया जाता है, जैसे कि मांगे गए प्रासंगिक साक्ष्य के स्तर पर प्राप्त सटीकता की डिग्री। सबसे बढ़कर, अच्छा शोध डिज़ाइन व्यावहारिक होना चाहिए। संबंधित साहित्य और संबंधित शोध रिपोर्ट की समीक्षा को डिजाइन के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में स्थापित किया गया है।

जनसंख्या

जनसंख्या का अर्थ है इकाइयों की समग्रता। यह एक सांख्यिकीय अवधारणा है जिसका अर्थ है बड़ी संख्या में इकाइयों का एक समूह जिसमें से एक छोटा समूह चुना जाता है और किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। वर्तमान अध्ययन की जनरांख्या में इ.गक प्रशिक्षु शिक्षक शामिल हैं। अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए जनसंख्या में से छात्रों का एक प्रतिनिधि नमूना चुना गया था।

नमूना

एक नमूना जनसंख्या का प्रतिनिधि अनुपात है। इस नमूने के अध्ययन से ही पूरी आबादी के बारे में कुछ जाना और कहा जाता है। अध्ययन के कुल नमूने में 10 बीएड प्रशिक्षु शिक्षक संस्थानों के 300 छात्र शामिल हैं। प्रत्येक इ.गक प्रशिक्षु शिक्षक संस्थान से छात्रों को नमूने के तौर पर लिया गया है। नमूने में शामिल बीएड प्रशिक्षु शिक्षक संस्थान भरतपुर जिले में स्थित हैं। निम्न तालिका इ.मक प्रशिक्षु शिक्षक संस्थान से लिया गया नमूना दिखाती है।

वर्तमान अध्ययन के प्रयोजन के लिए, दो चरणीय नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया था। सैम्पलिंग के प्रथम चरण में बी.एड. का चयन। महाविद्यालयों का कार्य सरल यादृ च्छिक प्रतिचयन का उपयोग करके किया गया। सैंपलिंग के दूसरे चरण में बी.एड. इन संस्थानों से आकस्मिक नमूनाकरण की तकनीक द्वारा शिक्षक प्रशिक्षुओं का चयन किया गया। इस नमूना पद्धति का उपयोग इसलिए किया गया क्योंकि अन्य चीजें अन्वेषक के नियंत्रण से परे थीं।

1. बी.एड. विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अपने अध्यापकों के व्यवहार के साथ एक पर्याप्त सहसम्बन्ध है ।

2. बी. एड. विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अपने अभिभावकों के व्यवहार के साथ एक पर्याप्त सहसंबंध है ।

तालिका 1 अध्ययन में शामिल छात्रों का नमूना आकार दिखाती है।

बीएड शिक्षक प्रशिक्षु शिक्षक	50	16.66
प्रशिक्षु छात्र एवं छात्राओं	250	84.4
अंतिम नमूना आकार	300	100

300 बीएड को उपकरण बांटे गए। प्रशिक्षु शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में से केवल 10 फॉर्म वापस नहीं किये गये एवं अधूरे भरे गये फॉर्म थे। इसलिए अंतिम नमूना आकार 250 बी. एड. था।

डेटा विश्लेषण की सांख्यिकीय तकनीकें

वर्तमान अध्ययन में डेटा के विश्लेषण की सामान्य प्रक्रिया में सांख्यिकीय विधियों का योगदान काफी अधिक है।

वर्तमान अध्ययन में विश्लेषण दो प्रकार का हैरू

1. वर्णनात्मक विश्लेषण.
2. अनुमानात्मक विश्लेषण |

1 वर्णनात्मक विश्लेषण

किसी विशेष समूह की विशेषता का अध्ययन वर्णनात्मक सांख्यिकीय उपायों द्वारा किया जा सकता है। सामान्यीकरण अध्ययन किए गए उस विशेष समूह तक ही सीमित है। इरा समूह से आगे कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। वर्णनात्मक विश्लेषण के लिए अन्वेषक द्वारा उपयोग की जाने वाली सांख्यिकीय तकनीकें इस प्रकार हैंरू

* केंद्रीय प्रवृत्ति के मापरू इसमें माध्य शामिल है।
* परिवर्तनशीलता के माप इसमें मानक विचलन शामिल है।
* अनुमान माध्य और मानक विचलन के जनसंख्या मापदंडों का अनुमान।
* ग्राफिकल विधियाँरू इसमें बार आरेख शामिल हैं।

2 अनुमानात्मक विश्लेषण

अनुमानित विश्लेषण द्वारा किए गए सामान्यीकरण को अनुमानित जनसंख्या तक बढ़ाया जा सकता है। विशेषताएँ वर्तमान अध्ययन में डेटा के अनुमानात्मक विश्लेषण के उद्देश्य से निम्नलिखित तकनीकों का उपयोग किया गया है।

* सहसंबंध का गुणांकरू
* इस तकनीक का उपयोग बीएड के मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध का पता लगाने के लिए किया गया है। प्रशिक्षुओं और शिक्षक का व्यवहार, सामाजिक स्थिति और आर्थिक स्थिति।
* इस उद्देश्य के लिए पियर्सन के आर या सहसंबंध के उत्पाद क्षण गुणांक का उपयोग किया गया है।

टी-टेस्ट

इस तकनीक का उपयोग यह पता लगाने के लिए किया गया है कि बीएड के मानसिक स्वास्थ्य में कोई अंतर है या नहीं। प्रशिक्षुओं को शिक्षक व्यवहार, सामाजिक स्थिति और आर्थिक स्थिति, लिंग वार और माध्यम वार।

एनोवा

वेरिएंस या एनोवा का विश्लेषण दो या दो से अधिक नमूनों के साधनों की तुलना के लिए चुनी गई एक सांख्यिकीय पद्धति है। यह शून्य परिकल्पना की जाँच करता है कि दो या दो से अधिक सेटों के नमूने समान माध्य स्कोर वाली आबादी से लिए गए हैं।

डेटा विश्लेषण

डेटा के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त तकनीकें

अध्ययन की आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार करने, उद्देश्यों को निर्दिष्ट करने, संबंधित साहित्य की समीक्षा करने और पिछले अध्यायों में अध्ययन की विधि और प्रक्रिया का वर्णन करने के बाद अगला कदम उद्देश्यों के आलोक में डेटा का विश्लेषण और व्याख्या करना है और अध्ययन की परिकल्पनाएँ, वर्तमान शोध प्रयास का मुख्य उद्देश्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच मानसिक स्वास्थ्य के साथ माता-पिता की भागीदारी और भावनात्मक योग्यता का संबंध है। इसलिए, बताए गए उद्देश्यों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान अध्याय परिणामों के विश्लेषण और व्याख्या के लिए समर्पित है।

नमूने का वर्गीकरण

वर्तमान अध्ययन में, अन्वेषक ने सी.बी.एस.ई. से संबद्ध हरियाणा के दो जिलों से 300 बी. एड प्रशिक्षण शिक्षकों का एक नमूना लिया है। फिर उसने माध्य की गणना की, मानसिक स्वास्थ्य और माता-पिता की भागीदारी, और मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक क्षमता के बीच संबंध जानने के लिए प्रत्येक समूह के मानक विचलन (एस.डी.) और गुणांक सहसंबंध की गणना की गई।

तालिका 3 बीएड प्रशिक्षण शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और माता-पिता की भागीदारी के बीच सहसंबंध का गुणांक

चर	संख्या	मतलब	एस.डी	सहसंबंध गुणांक	स्तर का महत्व
मानसिक स्वास्थ्य	300	139.04	27.92	0.927	0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण
अभिभावकों की भागीदारी	300	64.56	17.13		

तालिका 3 दर्शाती है कि बीएड प्रशिक्षण शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और माता-पिता की भागीदारी के बीच सहसंबंध का गुणांक 0.927 है जो महत्व के 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है। यह इंगित करता है कि वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और माता-पिता की भागीदारी एक दूसरे के साथ सकारात्मक रूप से संबंधित है। तो, शून्य परिकल्पना, यानी, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच गानसिक स्वास्थ्य के साथ माता-पिता की भागीदारी का कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है, खारिज कर दी जाती है। यह सकारात्मक सहसंबंध दर्शाता है कि माता-पिता की भागीदारी में वृद्धि के साथ, वरिष्ठ गाध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य बढ़ता है और इसके विपरीत । इसकी व्याख्या यह की जा सकती है कि माता-पिता की भागीदारी जितनी अधिक होगी, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य उतना ही अधिक होगा और इसके विपरीत भी।

तालिका 4. बीएड प्रशिक्षण शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और उच्च अभिभावकीय भागीदारी के बीच सहसंबंध का गुणांक

चर	संख्या	मतलब	एस.डी	सहसंबंध गुणांक	स्तर का महत्व
मानसिक स्वास्थ्य	62	171.58	11.29	0.769	0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण
उच्च अभिभावकीय भागीदारी	62	85.64	6.90		

तालिका 4. दर्शाती है कि मानसिक स्वास्थ्य और बीएड प्रशिक्षण शिक्षकों की उच्च अभिभावकीय भागीदारी के बीच सहसंबंध का गुणांक 0.769 है जो 0.01 के महत्व के स्तर पर महत्वपूर्ण है। यह इंगित करता है कि वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य और माता-पिता की उच्च भागीदारी एक दूसरे के साथ सकारात्मक रूप से सहसंबन्द हैं। इसलिए, शून्य परिकल्पना, यानी, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के साथ माता-पिता की उच्च भागीदारी का कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है, खारिज कर दी जाती है। यह सकारात्मक सहसंबंध दर्शाता है कि माता-पिता की भागीदारी में वृद्धि के साथ, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य बढ़ता है और इसके विपरीत। इसकी व्याख्या यह की जा सकती है कि माता-पिता की भागीदारी जितनी अधिक होगी, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य उतना ही अधिक होगा और इसके विपरीत भी।

तालिका 5 बीएड प्रशिक्षण शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और माता-पिता की कम भागीदारी के बीच सहसंबंध का गुणांक

चर	संख्या	मतलब	एस.डी	सहसंबंध गुणांक	स्तर का महत्व
मानसिक स्वास्थ्य	87	104.72	16.36	0.698	0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण
उच्च अभिभावकीय भागीदारी	62	42.50	3.94		

तालिका 5 दर्शाती है कि मानसिक स्वास्थ्य और बीएड प्रशिक्षण शिक्षकों की कम अभिभावकीय भागीदारी के बीच सहसंबंध का गुणांक 0.698 है जो 0.01 के महत्व के स्तर पर महत्वपूर्ण है। यह इंगित करता है कि वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक

स्वास्थ्य और माता-पिता की कम भागीदारी एक दूसरे के साथ सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध हैं। तो, शून्य परिकल्पना, यानी, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच मानसिक स्वास्थ्य के साथ माता-पिता की कम भागीदारी का कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है, खारिज कर दी जाती है। यह सकारात्मक सहसंबंध दर्शाता है कि माता पिता की भागीदारी में कमी के साथ, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य कम हो जाता है और इसके विपरीत। इसकी व्याख्या यह की जा सकती

है कि माता-पिता की भागीदारी कम होगी, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य कम होगा और इसका विपरीत भी होगा।

तालिका 6 बीएड प्रशिक्षण शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और उच्च माता-पिता की भागीदारी के बीच सहसंबंध का गुणांक

चर	संख्या	मतलब	एस.डी	सहसंबंध गुणांक	स्तर का महत्व
मानसिक स्वास्थ्य	33	176.77	8.08	0.582	0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण
उच्च अभिभावकीय भागीदारी	33	87.90	4.20		

तालिका 6 दर्शाती है कि मानसिक स्वास्थ्य और महिला बीएड प्रशिक्षण शिक्षकों की उच्च माता-पिता की भागीदारी के बीच सहसंबंध का गुणांक 0.582 है जो 0.01 के महत्व के स्तर पर महत्वपूर्ण है। यह इंगित करता है कि मानसिक स्वास्थ्य और महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उच्च माता-पिता की भागीदारी एक दूसरे के साथ सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध है। तो, शून्य परिकल्पना, यानी, महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के साथ उच्च माता-पिता की भागीदारी का कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है, को खारिज कर दिया गया है। यह सकारात्मक सहसंबंध दर्शाता है कि माता-पिता की भागीदारी में वृद्धि के साथ, महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य बढ़ता है और इसके विपरीत। इसकी व्याख्या यह की जा सकती है कि माता-पिता की भागीदारी जितनी अधिक होगी, महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य उतना ही अधिक होगा और इसके विपरीत भी होगा।

तालिका संख्या 7 निजी संस्थानों के छात्र शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य के साथ आत्म अवधारणा और उसके आयामों के बीच सहसंबंध गुणांक के परिणाम

चर	मानसिक स्वास्थ्य			
	सह संबंध गुणक (आर-मूल्य)	टी मूल्य	पी-मूल्य	सिग.
खुद अवधारणा	0.191	2.30811	<0.05	एस
बुद्धिमत्ता	0.102	2.58989	<0.05	एस
भावनात्मक	0.108	2.74399	<0.05	एस
सामाजिक	0.247	2.18847	<0.05	एस
चरित्र	0.163	2.59446	<0.05	एस
सौंदर्य संबंधी	0.029	0.732809	>0.05	एन एस

1. निजी बी.एड. कॉलेजों के छात्र शिक्षकों के गानसिक स्वास्थ्य के संबंध में आत्ग अवधारणा के बीच 5: महत्त्व के स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण और सकारात्मक संबंध देखा गया (आर=0.191, पी<0-05)। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इसका मतलब यह है कि, निजी बी.एड. कॉलेजों के छात्र शिक्षकों की स्वयं की अवधारणा मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि पर प्रभाव डालती है।
2. स्वयं की अवधारणा और उसके आयाम के बीच एक महत्त्वपूर्ण और सकारात्मक संबंध देखा गया जो कि बुद्धिमत्ता (r=0.102 p<0-05), भावनात्मक (r = 0.108, p<0-05), सामाजिक (r=0.247 p<0-05) और चरित्र (r=0.163, ih<0-05) निजी बी.एड. कॉलेजों के छात्र शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में 5: महत्व के स्तर पर। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इसका मतलब यह है कि, निजी बी.एड. कॉलेजों के छात्र शिक्षकों की आत्म अवधारणा और उसके आयाम यानी बुद्धिमत्ता, भावनात्मक, सामाजिक और चरित्र मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि पर प्रभाव डालते हैं।
3. महत्व के स्तर पर निजी बी.एड कॉलेजों के छात्र शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में आत्म अवधारणा और इसके सौंदर्य आयाम (t 0.029, p>0-05) के बीच एक गैर महत्वपूर्ण और सकारात्मक संबंध देखा गया। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इसका मतलब यह है कि, निजी बी.एड कॉलेजों के छात्र शिक्षकों की आत्म अवधारणा आयाम जो सौंदर्यवादी है, मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव नहीं डालती है।

निष्कर्ष

बीएड प्रशिक्षण संस्थानों में तनाव को यदि अच्छी तरह से प्रबंधित नहीं किया गया तो इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणाम हो सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षणिक विफलता से जुड़ी कुछ आशंकित हताशा के संबंध में एक मानसिक संकट है, ऐसी विफलता की आशंका या यहां तक कि ऐसी विफलता की समस्याओं की संभावना के बारे में जागरूकता, उच्च माता-पिता की भागीदारी, कम भावनात्मक योग्यता ऐसे तनाव/कारक हैं जो मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि अधिक अध्ययन समस्याओं के कारण व्यक्ति अपनी समस्याओं का सामना करने में राक्षग नहीं हो सकते हैं और ऐसी सगस्याएँ उन्हें अधिक मानसिक स्वास्थ्य में डाल देती हैं। वर्तमान अध्ययन में बीएड प्रशिक्षण संस्थानके छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर माता-पिता की भागीदारी का महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया है। जिन छात्रों में अभिभावकों की भागीदारी अधिक होती है, उनमें मानसिक स्वास्थ्य कम अभिभावकों की भागीदारी वाले छात्रों की तुलना में अधिक होता है। इंटरमीडिएट स्तर पर अपने पाठ्यक्रमों का चयन करते समय छात्रों को उचित परामर्श की आवश्यकता होती है। माता-पिता को बच्चे की रुचि और योग्यता पर विचार करना चाहिए न कि पाठ्यक्रम के चयन पर थोपना चाहिए। पारिवारिक माहौल अनुकूल होना चाहिए और सीखने की प्रक्रिया को आनंददायक बनाना चाहिए और माता-पिता को इसे किशोरों के लिए तनावपूर्ण घटना बनाने से बचना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सुचि

[1] मिराजकर, आर. और पाटिल, एस. (2013), योग के माध्यम से तनाव और मानसिक स्वास्थ्य का संतुलन, मानसिक स्वास्थ्यरू शिक्षा की भूमिका, शुक्ला, आई., पारकर, एस. और वाघचौरे, एस., जीईएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, परेल, मुंबई, पृष्ठ संख्या (62-64) 1

[2] मिशाल, ए.एच. (2013), युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य को संभालने और उसकी सुरक्षा के लिए माता-पिता और शिक्षकों के लिए मानसिक स्वच्छता मंत्र। मानसिक स्वास्थ्यरू शिक्षा की

भूमिका, शुक्ला, आई., पारकर, एस. और वाघचौरे, एस., जीईएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, परेल, मुंबई, पृष्ठ संख्या (4-9)।

[3] निंबालकर, एस.जे. (2013)। उनके मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में माध्यमिक शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक अध्ययन, मानसिक स्वास्थ्यरू शिक्षा की भूमिका, शुक्ला, आई., पारकर, एस. और वाघचौरे, एस, जीईएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, परेल, मुंबई, पृष्ठ (36-39).

[4] पडाला, एल. (2013)। रंगा रेड्डी जिले में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों का एक अध्ययन, मानसिक स्वास्थ्यरू शिक्षा की भूमिका, शुक्ला, आई., पार्कर, एस. और वाघचौरे, एस., जीईएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, परेल, मुंबई, पृष्ठ संख्या (109-113)।

[5] शुक्ला, आई. (2013)। पाठ्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य का समावेशरू एक चेतावनी, मानसिक स्वास्थ्यरू शिक्षा की भूमिका, शुक्ला, आई., पारकर, एस. और वाघचौरे, एस., जीईएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, परेल, मुंबई, पृष्ठ संख्यारू 222।

[6] उपाध्याय, पी. और दुबे, आर. (2013)। कक्षा में सीखने के माहौल के संबंध में छात्रों के बीच मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन, मानसिक स्वास्थ्यरू शिक्षा की भूमिका, शुक्ला, आई, पारकर, एस। और वाघचौरे, एस, जीईएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, परेल, मुंबई, पृष्ठ (32-35)1

[7] फ्रीडली, एल. (2003). कट्टरपंथी मानसिकता, मानसिकता, बरो हाई स्ट्रीट, लंदन।

[8] डब्ल्यूएचओ, (2004)। मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना, डब्ल्यूएचओ, जिनेवा ।

[9] नायलर सी. और बेल ए. (2010)। मानसिक स्वास्थ्य और उत्पादकता चुनौती, द किंग्स फंड, लंदन।

[10] राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य विभाग इकाई। (2010)। मानसिक स्वास्थ्य में निजीकरण का मार्ग, एनडीटीआई, स्वास्थ्य विभाग, लंदन।

[11] गार्सिया, आई. साहित्य समीक्षा, पॉल हैमलिन फाउंडेशन, बिर्कबेक, लंदन विश्वविद्यालय ।

[12] सावंत, एस.वी., (2006), बी.एड. में पढाए जाने वाले शिक्षण के तरीकों के कार्यान्वयन में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों द्वारा अनुभव की गई कठिनाइयों का एक अध्ययन। नौकरी की प्रतिबद्धता के संबंध में स्तर, अप्रकाशित एम.एड. निबंध, शिक्षा विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय।

[13] बेस्ट, जे. डब्ल्यू और कान, जे.वी., (1986), रिसर्च इन एजुकेशन, प्रेंटिस हॉल इंक, नई दिल्ली।

[14] बुच, एम.बी. (एड) (1997), शिक्षा में अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण। एनसीईआरटी, नई दिल्ली।

[15] गैरेट, एच.ई. (1981), मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, वकील्स, फेफर और सिमंस लिमिटेड बॉम्बे–32।

[16] जाधव, के.आर., (2011), एक्शन रिसर्च, शुभाय पब्लिशर्स, मुंबई–28।